Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में बिम्ब योजना

**डॉ. बालेश्वर प्रसाद***

***ऐसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी) अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अतर्रा, बाँदा (उ.प्र.) भारत**

**शोध सारांश –**शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में बिम्ब योजना अत्यंत विकसित है। शमशेर की भाषा प्रधानत: बिम्बात्मक है। शमशेर बहादुर सिंह की बिम्ब-योजना आधुनिक हिंदी कविता में अद्धितीय है। उन्हें 'बिम्ब और शिल्प के महाकवि' के रूप में जाना जाता है। उनकी कविताओं में अमूर्त भावों को मूर्त रूप देने, रंगों और प्राकृतिक तत्वों के माध्यम से अनूठे शब्द-चित्र उभारने की अद्भुत क्षमता थी। शमशेर की कविताओं में आँख, कान और स्पर्श को जगाने वाले दृश्य और श्रव्य बिम्ब मिलते हैं।रंगों का प्रयोग: 'नीला' और 'पीला' रंग उनके प्रिय विशेषण हैं, जो आसमान, चांदनी या शाम के चित्रों को जीवंत करते हैं प्रकृति उनके यहाँ स्थिर नहीं रहती, बल्कि गतिमान और मानवीय क्रियाओं से जुड़ी होती है (जैसे 'उषा' कविता का भोर का दृश्य)। भौतिकता को हल्का करके किसी गहरे और सूक्ष्म भाव या चेतना की ओर इशारा करना उनकी बिम्ब-योजना की मुख्य विशेषता इस प्रकार उक्त शोधपत्र की शोधात्मक विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में बिम्ब योजना की चेतनाएँ विद्यमान हैं।

**प्रस्तावना –** प्रकृति के बाहरी चित्रण को प्रदर्शित करने के लिए बिंबों का सहारा लिया गया है। बिंबों के प्रयोग से कविता सजीव हो उठी है। भाषा भी सरल, सहज व सुबोध प्रयुक्त की गई है। कवि द्धारा 'राख से लीपा हुआ चौका', 'लाल केसर से धुली काली सिल' तथा 'लाल खड़िया चाक मली हुई स्लेट' इत्यादि बिंबों का प्रयोग किया गया है। त्वचा द्धारा अनुभूति स्पर्श कहलाती है। यह चाहे बाह्य पदार्थ द्धारा हो या वायु एवं प्राणियों द्धारा अर्थात स्पर्श का सीधा सम्बन्ध त्वचा से है। 'डॉ0 नगेन्द्र' के शब्दो मे, स्पृश्य-बिम्ब में स्पर्शजन्य संवेदना के समन्वय से बिम्ब का निर्माण होता है। पेशल या कोमल, ककर्श, कठोर, आदि विशेषण इस प्रकार के स्पर्श-बिम्बों के वाचक शब्द हैं।' शमशेर-कविता में ऐसी वृत्तियों और मानवीय स्पर्श की मॉसल अभिव्यक्ति हुई है। शमशेर द्धारा प्रयुक्त स्पृश्य बिम्बों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

'मै उस स्थान को चूमना
चाहता हूँ
जहाँ उसने अपना सर रखा था
तुम्हारे वक्ष पर
वह स्थान बहुत ही मुकद्दस है
X X X
'साडियों के-से नमूने चमन में उड़ते छबीले; वहाँ
गुनगुनाता भी सजीला जिस्म वह
जागता भी
मौन सोता भी, न जाने
एक दुनियाँ की
उमीद-सा
किस तरह।'[1]
'क्यारी
भरी गेंदा की
स्वर्णारक्त
क्यारी भरी गेंदा की:
तन पर
खिली सारी-
अति सुन्दर! उठाओ।
निज वक्ष।'[2]

**नाद बिम्ब-** इस बिम्ब का सम्बन्ध कर्णेन्द्रिय से होता है। डॉ0 नगेन्द्र इसके सम्बन्ध में कहते है, 'वर्ण-ध्वनि, छान्दसलय, तुकांत आदि के बिम्ब श्रव्य हैं' अनुप्रास, वृत्ति आदि से भी श्रव्य बिम्बों का उत्पादन होता है' साहित्य सृजन में ध्वनि बिम्बों का विशेष महत्व है। नाद-बिम्ब की दृष्टि से प्राकृतिक ध्वनियाँ, वस्तु-ध्वनियों, संगीत-ध्वनियों को शामिल कर सकते हैं। शमशेर-कविता में नाद (ध्वनि-बिम्बों) का प्रयोग प्रभावशाली है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

'कि मेघ गरजे,
और मोर दूर और कई दिशाओं से
बोलने लगे-पीयूअ!पीयूअ! उनकी
हीरे-नीलम की गर्दनें बिजलियों की तरह
हरियाली के आगे चमक रही थीं।
कहीं छिपा हुआ बहता पानी
बोल रहा था अपने स्पष्टमधुर
प्रवाहित बोल।'[3]

प्रकृति चित्रों में भी मानवीकरण के प्रवृति दृश्य के बिम्बों को प्रमुख रुप से विश्वसनीयता प्रदत्त करती है। इसमें हवा, चाँद, नदी आदि के चित्र व्यक्त किये गये हैं।

'पीछे छूट रही थी
गाती हुई टिटिहरियाँ
और सघन करती-सी

रूकी हवा का धुँधला नीला मौंन।'[4]

नाद बिम्ब की दृष्टि से शमशेर जी ने प्रकृति ध्वनियों, वस्तु ध्वनियों, संगीत ध्वनियों को शामिल किया है। शमशेर की कविताओं में नाद बिम्बों का प्रयोग प्रभावशाली है

'पहली पहली
गुटुरगूँ गुटुरगूँ गुटुरगूँ
X X X
और फिर जाने कहाँ से
गुटुरगूँ गुटुरगूँ
सुनाई पड़ने लगती।'[5]
य'हरहरा कर उठ रहा है
नव
जनमहासागर।'[6]

**रूप बिम्ब–** रूप बिम्ब एक प्रकार का भाव गर्भित शब्द चित्र है, जो नयन ही नहीं, वरन् सभी ज्ञानेंद्रियों तृप्त करता है। रूप बिम्ब की संयोजन शक्ति पर विशेष बल दिया गया है तथा काव्य के सौंदर्य तत्व के रूप में बिम्ब का विश्लेषण लहरते केश के रूप में किया गया है–

'केश
लहरते हैं दूर तक
हवा में
थिरकती है रात:
हम खो गए हैं
अलग–अलग
हरेक।'[7]

कवि वर्तमान समाज में क्रांति और उत्साह की भावना का संचार कर नवजीवन में सुखद परिवर्तन लाना चाहता है–

'बादलों की इन्द्रधनुषी हँसियाँ?
बादलों में इन्द्रधनुषाकार लहरीला
लाल हँसियाँ
कहाँ है?'[8]

कवि अपने भावातिरेक से प्रेरित होकर काव्य का सजन करता है काव्य की सफलता यही है। कि वह वर्ण्य विषय सम्बंधी बिम्बों को पढते ही आँखों के सामने चित्र से घूमने लगते हैं। रोमांटिक कविताओं में रुप बिम्ब की प्रधानता होती है–

'ये नीले होंट
जो शाम का पूरब हैं आज
क्या कहते हैं'[9]

ऊषा के जल में झलकता उज्ज्वल प्रतिबिम्ब जैसे– राशि– राशि सौंदर्य को अनन्त नील गहराइयों में परिव्याप्त कर रहा है। ऊषा की सुन्दरता, जादू या रहस्य की तरह फैल गयी हो । विशेषता यह है कि जादू यहाँ कोई अति प्राकृत तत्व नही है वह पूरी तरह से उपजता है।

'नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।'[10]

**आस्वाद्य–बिम्ब–** आस्वाद्यता का सम्बन्ध जिह्वा रसास्वादन करती है। .....अन्य संवेदनाओं के समान आस्वाद्य का भी अपना ही महत्व है। जब हम किसी वर्णन को पढ़कर उसके स्वाद की अनुभूति करते हैं। तो आस्वाद्य बिम्ब की निष्पत्ति होती है।..... 'डॉ0 नगेन्द्र' कहते है, .....सौन्दर्य के आस्वाद्य की अभिव्यक्ति और व्याख्या दोनों में ही आस्वाद्य पूरक बिम्बों का प्रयोग स्वभावत: सरल होता है।' शमशेर–काव्य में स्वाद–संवेदना की कलात्मक अभिव्यक्ति हुई है। इसके 'रासायनिक बिम्ब' भी कहते है। स्वाद संवेदना के अनेक चित्र उनकी कविता में मिलते हैं। किसी भी बिम्ब को रसमेंद्रिय बनाना अत्यंत कठिन होता है फिर भी शमशेर बहादुर सिंह ने रस बिम्बों की यदा–कदा चर्चा की है–

'हल्की मीठी चा–सा दिन,
मीठी चुस्की–सी बातें,
मुलायम बाँहों–सा अपनाव।'[11]

उपर्युक्त कविता में हल्की, मीठी, चुस्की, चबाना, अकराना आदि शब्द अस्वाद बिम्बों के सार्थक शब्द है, उनका आस्वाद प्राय: मादक रहा है।

**घ्राण बिम्ब–** ये बिम्ब जो गंध सम्बन्धी अप्रस्तुत विषय वस्तु में गंध सम्बन्धी चेतना जाग्रत कर पाठक को भाव–विभोर कर दें घ्राण बिम्ब की कोटि में आते हैं। इनकी गंध सम्बन्धी अनुभूति इतनी प्रबल होती है कि उसका प्रभाव पाठक के मनोमस्तिष्क पर छा जाता है और वह वर्णन मात्र से उस अप्रस्तुत से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। गन्ध की अनुभूति नासिका द्वारा ही होती है। .....जिसकी गंध शक्ति जितनी ही तीव्र होगी उसकी बोध क्षमता उतनी ही अधिक होगी। गन्ध में उत्तेजना होती है जिससे सक्रियता बढ़ती है।' शमशेर ने अपनी गंध चेतना से पाठक की गंध चेतना को गहरे छुआ है। उनके दृश्य–बिम्ब ध्वनि जितने साफ हैं, उतने ही स्पष्ट उनके गंध बिम्ब भी हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है।

'धुआँ धुआँ
सुलग रहा
X X X
जल रहा
'धुआँ धुआँ
ग्वालियर के मजूर का हृदय।'[12]
–'थी महक
शराब की
जो शहादत की फिजा से ढल रही थी कई युग से।'[13]

**प्राकृतिक चित्रण में बिम्ब विधान–** शमशेर की कविता में प्रकृति–बिम्बों के साथ अन्य छोटे–छोटे प्रकृति बिम्बों के साथ छोटे–छोटे बिम्बों का सुन्दर समन्वय हुआ है। शमशेर के बिम्ब जन–जीवन के साधारण व्यापार को अर्थवता प्रदान करते हैं। उनके प्रकृति बिम्बों में संश्लिष्ट रोमानी बिम्बों की मार्मिकता है। उनकी कविता में प्रकृति– बिम्बों का बड़ा उदात्त चित्रण है–

'चाँदनी में घुल गये हैं
बहुत–से तारे बहुत कुछ
घुल गया हूँ मैं
बहुत कुछ अब
रह गया सा एक सीधा बिंब
चल रहा है जो
न जाने किधर।'[14]

बिम्ब विधान के द्वारा अर्थ को स्पष्टता मिलती है, भाव को व्याख्या मिलती है, भाव को व्याखा मिलती है, वस्तु को प्रत्यक्षता मिलती है और गुण

को हृदय सवेंदी बनाया जाता है उदाहरण के लिए शमशेर जी की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

'धूप की चुक्सियाँ
पिये जाय, आँख मीच, सोनाली माटी
कन्–कन! जिये जाय
थप्–थप् केले के पातों पर हाथों से
हाथ दिये जाय
थप्–थप्.....'[15]

शमशेर की कविता में प्रकृति के मधुर और आकर्षक रुप भी व्यापक रुप में मौजूद है। एक में वे 'दिन' के लिए जिस प्रकार से बिम्ब का प्रयोग करते हैं वह बहुत अनुपम है–

'दिन
किशमिशी रेशमी गोरा
मुस्कराता
आब
मोतियों को छिपाए अपनी
पाँखुड़ियों तले।'[16]

दिन के लिए प्रयोग में लाया गया किशमिशी रेशमी गोरा/ मुस्कराता अत्यधिक सुन्दर बिम्ब है। इस प्रकार से सम्पूर्ण कविता विम्बों में ही खिली है–

'एक आदर्श
लहरों के पार
अद्भुत रूप में मौन है।'[17]

शमशेर की रचना प्रक्रिया जटिल है और अभिव्यक्ति संकेतात्मक, इसीलिए उनके बिम्ब अधिकतर संकुल होते हैं। वे ऐन्द्रिय और अतीन्द्रिय दोनों अनुभूतियों को अपनी रचनाओं में बिम्बों के द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

'सिंह और नाखून
लोहे के बख्तर कन्धों पर सीने में सुराख हड्डी का।
आँखों में घास–काई की नमी।
एक मुर्दा हाथ
पाँव पर टिका
उल्टी कलम थामे।'[18]

'सींग और नाखून' चेतना की प्रगति के व्यंजक हैं। सींग का तत्सम श्रृंग है, जिससे श्रृंगार और सारंग जैसे शब्द बनते हैं। सींग या श्रृंग का कामोदय से सीधा सम्बन्ध है क्योंकि वह आस्फालन का प्रतीक है। साधुओं की श्रृंगी नाद उद्धोधक होता है। सींग से बने धनुष को सारंग कहते हैं। पर्वतों के श्रृंग भी प्रगति या उत्थान के प्रतीक हैं। नाखून के पर्याय नख और स्मराकुंश (कामदेव का अंकुश है) वह हाथ के सिरे पर उगता है और हथियार का काम करता है। बार–बार उगने के कारण उसे पुनर्भव कहते है। इसी कारण नाखून प्रगति व्यंजक है। लोहा, कंधा, हड्डी, हाथ, कलम और पत्थर सक्रिय शक्ति के सूचक है। आँख चेतना का सशक्त प्रतीक है। एक उदाहरण देखिए, जहाँ पर कवि ने नवेली के मुखकमल की तुलना पतझड के पीतवर्णी पत्तों से तथा उसके डबडबाए हुए आसुओं की तुलना सद्य:पात सांध्य तारक से की है–

'एक पीली शाम
पतझर का जरा अटका हुआ पत्ता
शान्त
मेरी भावनाओं में तुम्हारा मुखकमल
कृश म्लान हारा–सा
X X X
अब गिरा अब गिरा वह अटका हुआ आँसू
सांध्य तारक–सा
अतल में।'[19]

पत्ता मानव जीवन का प्रतीक है। प्रेमिका का मुख प्रसिद्ध उपमान है। अश्रु–तारक का बिम्ब सूर्य के उपमानों से है। पत्ता और कमल जीवन के प्रतीक है। अश्रु तारक भी जीवन की भंगुरता का प्रतीक है। कविता में अस्तमान रवि का प्राकृतिक बिम्ब अंकित है। पत्ता, मुख–कमल, आँसू और तारक की उपमाएँ सूर्य के लिए आयी है। प्रतीकात्मक स्तर पर पूरी कविता जीवनोत्सर्ग की कामना से प्रेरित है। इसके अतिरिक्त 'अटका हुआ' 'अब गिरा' पद विशेषण के रूप में प्रयुक्त है। 'अटका हुआ' की स्थिति का 'अब गिरा' में मृत्यु कामना का व्यंजक है।

'प्रात: नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा हैं)
बहुत काली सिल जरा–से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
X X X
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।'[20]

'ऊषा' शीर्षक कविता में शमशेर की चेतना उसी सौन्दर्य के भवन में लीन रहती है। शंख का साहचर्य शिव की नीलकंठता के कारण भी समाचीन है। सुडौल ग्रीवा को नीले शंख का उपमान नीलकंठ का स्मरण करवा देता है। शमशेर ने प्रात:कालीन आकाश के नील वर्ण को लक्षित किया है। आकाश की नीलिमा आध्यात्मिक गांभीर्य का सूचक है। नीला रंग आध्यात्मिकता का प्रतीक है। नीले शंख की तरह राख और सिल के उपमान भी शिव है। शैल का पर्याय है नग, जो यनगच्छतीति नग : की व्यत्पत्ति के आधार पर शिव का प्रतीक हो जाती है। नील जल का उपमान अनेकार्थी है।

यमुना और समुद्र के जल का रंग नीला है। 'नीलजल' में हिलती 'गौर झिलमिल देह' गंगा यमुना के संगम का संकेत देती है। गौर देह का सम्बन्ध गौरी या पार्वती से भी है। शमशेर ने चौका लीपकर, सिल धोकर और स्लेट–पट्टी मलकर स्नान करती आधुनिका का चित्र खींचा है, जो सुबह के काम निपटाकर नहाना पसन्द करती है। शमशेर की इस कविता में ग्रामीण सौन्दर्य का पुट दिखाई देता है।

'मेरी बाँसुरी हैं एक नाव की पतवार–
जिसके स्वर गीले हो गए हैं,
छप्–छप्–छप् मेरा हृदय कर रहा है
छप् छप् छप्।'[21]

स्वर गीले होना मुहावरा है, पर कविता के यहाँ वह अपने विशिष्ट अंदाज के साथ आता है। छप्–छप्–छप् करता हुआ हृदय अर्थात जल हृदय बनकर उमड कर बह रहा है वह जल स्रोत बन गया है। नदी में अति स्वरों की नाव है, जिसे बाँसुरी खे रही है। बाँसुरी के सुरों की तरह मधुर और अपनी ओर आकर्षित करने वाली सारी बात बिम्बात्मक ढंग से कहते हैं।

शमशेर का कविता संग्रह यइतने पास अपनेय में 'सत्य' को एक सापेक्ष रूप में व्यक्त किया गया है यहाँ पर दृश्य जगत (मृत्युलोक) की सापेक्षता में एक 'नये लोक' की अनुभूति की गयी है। यह अनुभूति प्रकृति चित्रण के दौरान प्राप्त होती है क्योंकि प्रकृति में ही यनया लोक' का बिम्ब उभरकर आता है–

'मैं विस्मय से एकाएक देख रहा हूँ
कि वह नया लोक
उस अपार मृत्युलोक में
कहाँ से प्रकट हो गया।'[22]

शमशेर की 'मौन गेरू पंख' कविता में बादलों की गति का उसके रंग का संकेत यगेरू पंख' के द्वारा किया गया है जो श्याम पथ पर न जाने कौन सी 'गहन गति' खोलते हैं। ये सुरमई गेरू पंख वाले बादल बिम्बात्मक रूप में 'सन्यासी' के रूप भी हैं क्योंकि 'सन्यासी' के गेरूआ वस्त्र से उनकी बिम्बात्मक समानता है–

'सुरमई गेरू
पंख
आँखों में खोलते हैं श्याम पथ पर
कौन सी गति गहन।'[23]

**निष्कर्ष–** इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में बिम्ब विधान अत्यंत विकसित है। अत्यंत विकसित है।शमशेर की कविता में अभिव्यक्ति की समृद्धि उनकी भाषा के द्वारा और उनकी कविता में आये बिम्बों के द्वारा प्रकट होती हे। बिम्बों का जो संसार उनकी रचनाओं में प्रकट हुआ है, उससे उनकी कविताओं का सौन्दर्य व्यक्त होता है। उनके रचना संसार में शाम, समुद्र, दिवस, सूर्य, आकाश, क्षितिज, नदी, धूप, लहरें, किरणें इत्यादि बिम्बात्मक अभिव्यक्ति पाते हैं।शमशेर बिम्ब प्रधान कवि हैं और इस बिम्बवादी प्रभाव को उन्होंने अनेक स्रोतों से ग्रहण किया है। बिम्ब उनकी रचना संसार के अणु है। शमशेर बिम्बों में कविता लिखते हैं। प्रभाववाद, अतियथार्थवाद, बिम्बवाद, प्रतीकवाद और सभी स्रोतों से बिम्बों' की रचनात्मकता को ग्रहण किया है।शमशेर की कविताओं में बिम्ब उनकी कविता के अर्थविकास में योग देते हैं। बिम्बों का संसार उनकी रचनओं में प्रकट होता है, उससे उनकी कविताओं का सौन्दर्य व्यक्त होता है। बिम्बों की रचना में शमशेर विशेष उल्लेखनीय हैं। है। इस प्रकार उक्त शोधापत्र की शोधाात्मक विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में बिम्ब विधान की चेतनाएँ विद्यमान हैं।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :–**

1. काव्य बिम्ब, डॉ0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग, नई दिल्ली, पृ0सं0–9
2. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ,पृ0सं0–138
3. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ,पृ0सं0–20
4. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ,पृ0सं0–162
5. काल तुझसे होड है मेरी, शमशेर बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ,पृ0सं0–71
6. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ,पृ0सं0–43
7. चुका भी हूँ मै नही, शमशेर बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–36
8. प्रतिनिध कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली , पृ0सं0–20
9. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ,पृ0सं0–49
10. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ0सं0–141
11. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ0सं0–36
12. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ0सं0–41
13. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ0सं0–154
14. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–21
15. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–63
16. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–46
17. इतने पास अपने, शमशेर बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–58
18. शमशेर कविता लोक, जगदीश कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–156
19. कुछ और कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–29
20. टूटी हुई बिखरी हुई, शमशेर बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–13
21. समकालीन कविता, डॉ0 मालती तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0सं0–27
22. इतने पास अपने, शमशेर बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–33
23. टूटी हुई बिखरी हुई, शमशेर बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–108

**********